पाठ- 4

नीति निर्झर

दोहों के भाव

1. जो रहीम उत्तम ———— लपटे रहत भुजंग।

भाव (अर्थ) रहीम कहते हैं, जो अच्छे स्वभाव के मनुष्य होते हैं, उनको बुरी संगति भी बिगाड़ नहीं पाती, जहरीले साँप चन्दन के वृक्ष से लिपटे रहने पर भी उस पर कोई जहरीला प्रभाव नहीं डाल पाते।

2. तरुवर फल ———— सँचहि सुजान॥

अर्थ - वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं और सरोवर अपना पानी स्वयं नहीं पीती है। इसी तरह अच्छे और सज्जन व्यक्ति तो है जो दूसरों के कार्य के लिए संपत्ति को संचित करते हैं।

3. कहि रहीम ———— तेई साँचे मीत।

अर्थ - रहीम जी कहते हैं सम्पत्ति की अधिकता होने पर बहोत सारे लोग आपके मित्र बन जाते हैं, उस समय जब आपके पास संपत्ति होती है तब लोग अलग-अलग बहाने ढूंढ कर आपसे मित्रता करने का प्रयास करते हैं। लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए की हमारे सच्चे मित्र वही हैं, जो हमारा बुरा समय आने पर भी साथ देने को तैयार रहता है।

Scanned with CamScanner

(4) रहिमन धागा — — — — गाँठ परी जाए।

अर्थ - जिस प्रकार किसी धागे को एक बार तोड़कर जब जोड़ते हैं तब उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार रिश्तों को दोबारा जोड़ने पर उनमें भी गाँठ पड़ जाती है। इसलिए रहीम कहते हैं कि हमें अपने प्रेम के रिश्तों को धागे की एक ही झटके में नहीं तोड़ना चाहिए बल्कि उन्हें टूटने से बचाने का प्रयास करना चाहिए।

(5) बड़े बड़ाई — — — — टका है मेरो मोल।

अर्थ - जो सचमुच बड़े होते हैं वे अपनी बड़ाई नहीं किया करते। बड़े बड़े बोल नहीं बोला करते। हीरा बहुत मूल्यवान होता है फिर भी वह कभी नहीं कहता कि मेरा मोल लाख टके का है।

(6) दोनों रहिमन — — — — बसंत के माहिं॥

अर्थ - कौआ और कोयल काले रंग के एक समान होते हैं, जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब वसंत ऋतु आती है तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

(7) रहिमन देखि ———————— कहा करै तरवारि॥

<u>अर्थ</u> – रहीम कहते हैं कि बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु को फेंक नहीं देना चाहिए, क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार क्या काम देगी। अर्थ यह है कि सभी का अपना-अपना महत्व होता है।

Scanned with CamScanner

मौखिक प्रश्न -
उत्तर दीजिए।

(क) किस तरह के लोग अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते?
उत्तर सज्जन लोग अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते।

(ख) सुई के स्थान पर क्या काम नहीं आती?
उत्तर सुई के स्थान पर तलवार काम नहीं आती।

(ग) हमें किस प्रकार के संबंधों को नहीं तोड़ना चाहिए?
उत्तर हमें प्रेम के संबंधों को नहीं तोड़ना चाहिए।

(घ) श्रेष्ठ व्यक्ति किस प्रकार के बोल नहीं बोलते?
उत्तर श्रेष्ठ व्यक्ति बड़े बोल नहीं बोलते।

Scanned with CamScanner

उत्तर - (5) प्रश्न संख्या 2)

(क) कवि रहीम सच्चे मित्र की पहचान बताते हुए कहते हैं कि सच्चा मित्र वही है जो मुसीबत में साथ दे।

(ख) जो लोग उत्तम प्रकृति के होते हैं उन पर बुरी संगति का असर नहीं पड़ता है।

(ग) वृक्ष परोपकार की भावना से ओत-प्रोत होते हैं। इस कारण वे अपना फल स्वयं नहीं खाते हैं।

(घ) सज्जन व्यक्ति अपनी संपत्ति का संचय परोपकार के लिए करते हैं।

(ङ) कवि रहीम कहते हैं कि जब तक कोयल और कौआ बोलते नहीं है तब तक दोनों समान लगते हैं, लेकिन जब बसंत ऋतु आती है, तब कोयल की मधुर वाणी से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner

(5) भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

भाव स्पष्ट:- रहीम कहते हैं कि बड़ी वस्तु देखकर छोटी वस्तु का त्याग नहीं करना चाहिए, क्योंकि जहाँ छोटी सुई काम आती है वहाँ बड़ी से बड़ी तलवार भी कुछ नहीं कर सकती है।

(ख) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से न जुरे, जुरे गांठ परी जाय॥

भाव स्पष्ट:- जिस प्रकार किसी धागे को एक बार तोड़कर जब जोड़ते हैं, तब उसमे गांठ पड़ जाती है, उसी प्रकार संबंधों को दोबारा जोड़ने पर उनमे भी गाँठ पड़ जाती है। इसलिए, रहीम कहते है कि हमे कभी भी अपने प्रेम के संबंधों को ऐसे ही एक झटके में नहीं तोड़ना चाहिए, बल्कि उन्हें टूटने से बचाने का प्रयास करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

लिखित प्रश्न

1. सही उत्तर पर ✓ लगाइए।

क. परोपकारी स्वभाव किसका होता है?

- वृक्ष का
- सरोवर का
- ✓ दोनों का

ख. चंदन किसका प्रतीक है?

- कुसंगति का
- ✓ उत्तम प्रकृति का
- मित्रता का

2. हाँ या नहीं में उत्तर लिखिए।

क. हमें अपनी प्रकृति उत्तम रखनी चाहिए। हाँ

ख. हमें केवल बड़ी वस्तुओं को अपनाना चाहिए। नहीं

ग. सज्जन व्यक्ति अपने परिवार के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। नहीं

घ. हीरा अपना मूल्य लाख टका बताता है। नहीं

Scanned with CamScanner

3. दिए गए भाव से संबंधित दोहा पाठ में से छाँटकर लिखिए।

क. हीरे का मूल्य जौहरी जानता है।

बड़े बड़ाई न करें, बड़ो न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका है मेरो मोल॥

ख. सच्चा मित्र विपत्ति में हमारी मदद करता है।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

Scanned with CamScanner

सोचो और बताओ

अगर प्रकृति भी मनुष्य की भाँति स्वार्थी हो जाए, तो क्या होगा?

यदि प्रकृति भी मनुष्य की भांति स्वार्थी हो जाए, तो हम मनुष्यों का जीवन बहुत ही मुश्किल हो जाए, क्योंकि, हमें सबकुछ प्रकृति से ही मिलता है,- जैसे - हवा, जल, भोजन आदि। और जीने के लिए ये सभी आवश्यक हैं, यदि प्रकृति हमें ये सब देना बंद कर दे तो हमारा जीवन ही नहीं रहेगा। इसलिए हमें प्रकृति के प्रति सदैव आभारी रहना चाहिए और उसकी देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि प्रकृति के बिना हमारा जीवन असंभव है।

भाषा बोध

1. पर्यायवाची रूप लिखिए।

क. भुजंग — साँप
ख. मीत — मित्र
ग. तरुवर — पेड़
घ. सरवर — सरोवर
ङ. तलवार — असि
च. संपत्ति — धन - दौलत

2. दिए गए शब्दों के विलोम रूप लिखिए।

क. विष — अमृत
ख. प्रेम — घृणा
ग. सच्चे — झूठे
घ. बहुत — कम
ङ. टूटना — जुड़ना
च. एक — अनेक

Scanned with CamScanner

3. रेखांकित शब्दों के सही अर्थ पर ✓ लगाइए।

क. तरुवर फल नहिं खात है। (परिणाम/खाने की वस्तु ✓)

ख. मत तोरो चटकाय। (नहीं ✓/वोट)

ग. लाख टका है मेरो मोल। (संख्या ✓/पदार्थ)

घ. लघु न दीजिए डारि। (शाखा/त्यागना ✓)

4. दिए गए शब्दों के मानक रूप लिखिए।

क. साँचे	सच्चे	ख. आवै	आए
ग. परी	पड़ना	घ. मेरो	मेरा
ङ. मोल	मूल्य	च. सँचहि	संचित

5. दिए गए शब्दों का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए।

क. संग	प्रसंग	संगम	संगति
ख. फल	निष्फल	फलदायक	सफल
ग. विष	विषय	विषैला	विषधर

6. वर्ण-विच्छेद कीजिए।

क. धागा — ध् + आ + ग् + आ

ख. कसौटी — क् + अ + स् + औ + ट् + ई

ग. तरुवर — त् + अ + र् + उ + व् + अ + र् + अ

घ. रहिमन — र् + अ + ह् + इ + म् + अ + न् + अ

Scanned with CamScanner